जैन–धर्म में विश्व शान्ति की आशा किरण

डॉ0 सन्तोष कुमार पाण्डेय

दुःख निरोध एवं राद्वेषादि सांसारिक वासनाओं के परित्याग के लिए किया जाने वाला आचरण ही पंचमहाव्रत है। इसी पंचमहाव्रतों ने जैन–धर्म को आज भी प्रासंगिक बनाये रखा है। जैन–धर्म में सम्यक आचरण को सदाचार भी कहते हैं। व्यक्ति सम्यक आचरण से ही अपने को कुमार्ग से सुमार्ग पर लगा सकता है। धर्म एवं दर्शन का परम् उद्देश्य भी यही होता है।

वर्तमान समय में विश्व में अनेक समस्याओं ने जन्म ले लिया है। मानव पग–पग पर विनाश को आमंत्रित करते दिख रहा है। इस घोर महाविनाश के अन्धकार में जैन–धर्म विश्व शान्ति में आशा की किरण–सा दिखाई दे रहा है। यह किरण पंचमहाव्रतों के रूप में जैन–धर्म में विद्यमान है।